विश्वभाषा के रूप में हिन्दी के बढ़ते प्रभाव

प्रो0 वीरेन्द्र सिंह यादव,

प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ,उ.प्र.

शोध सारांश

विश्वपटल पर हिन्दी की उपस्थिति को लेकर हम गर्व कर सकते हैं– बावजूद कुछ छिटपुट चिन्ताओं के। हिन्दी के गढ़ माने–जाने वाले देशों जैसे रूस और जर्मनी में हिन्दी के पठन–पाठन और उसके विस्तार का प्रसार हुआ है। कुछ पहले ब्रिटेन के एक स्थापित विश्वविद्यालय में हिन्दी के पठन–पाठन को लेकर जो हुआ, वह काबिलेतारीफ है। लेकिन सच्चाई यह भी है कि भारत में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के प्रभावशाली आगमन और उससे उपजे भारतीय बाजार के दबाव ने हिन्दी की ओर बाहर और भीतर दोनों ही लोगों का न केवल ध्यान आकृष्ट किया है बल्कि उसकी उपयोगिता को सिद्ध करते हुए उसके अन्यान्य रूपों के विस्तार को भी संभव किया है और यह क्रम बढ़ता ही जा रहा है। विश्व के स्तर पर हिन्दी के वेबजालों की संख्या में बढ़ोत्तरी होती जा रही है। मीडिया और प्रोपेगेंडा साहित्य से लेकर वार्तालापी हिन्दी की दिशा में तो जैसे विस्फोट सा हुआ है। हिन्दी चैनलों की पहुँच उन देशों तक भी हुई है, जहाँ पहले इस दृष्टि से भयंकर उजाड़ था, जैसे दक्षिण कोरिया।

बीज शब्द– *विश्वभाषा हिन्दी, भारत,विकास यात्रा,प्रभावशाली,वैज्ञानिक भाषा।*

मानव सभ्यता के विकास के साथ ही भाषा भी विकसित होती रही है। परिवर्तन शाश्वत सत्य है। यह परिवर्तन सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि सभी क्षेत्रों में सतत होता रहा है। भाषा भी इससे अछूती नहीं रही है। भाषा के भी स्वरुप में सतत परिवर्तन होता रहा है। विश्व में अनेक भाषाओं का उद्भव हुआ है। विकास की प्रक्रिया में आगे बढ़ते हुए भाषाओं का स्वरुप भी बदला। भाषाओं के विकास व स्वरुप में परिवर्तन के परिणाम स्वरुप कुछ भाषाओँ के क्षेत्र सीमित हो गए, कुछ का अस्तित्व समाप्त हो गया और कुछ भाषाएँ अति समुन्नत होकर वैश्विक स्तर तक प्रचलित हो गईं। भाषा की इस विकास यात्रा में भाषाएँ समृद्ध हुईं। हमारे देश की भाषा हिंदी भी विश्व की उन भाषाओँ में से है जो अपने उद्भव के पश्चात् लगातार समृद्ध होती रही। अंग्रेजों से स्वतंत्र होने के पश्चात् भारत की राजभाषा के रूप में हिंदी को मान्यता दी गई। भारत में सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा हिंदी है। देश की स्वतंत्रता के पूर्व स्वधीनता संग्राम के अमर सेनानियों ने हिंदी को राष्ट्र के स्वर के रूप में मानते हुए इसको अपने विरोध और प्रतिकार की भाषा बनाया। राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने का माध्यम मानते हुए स्वाधीनता सेनानियों ने हिंदी को सारे देश में प्रचलित किया। राष्ट्रीय अस्मिता व राष्ट्रीय स्वाभिमान के रूप में हिंदी को तब अंगीकार किया गया। तत्कालीन सभी राष्ट्रीय नेताओं ने हिंदी को राष्ट्र की एकता का माध्यम माना। वर्तमान समय में राष्ट्रीय व वैश्विक परिदृश्य पूर्णतया परिवर्तित हो गया है। भाषाओं का स्वरुप भी परिवर्तित हो गया है। हमारी राष्ट्र भाषा हिंदी भी इससे अछूती नहीं रही है।

हिंदी विश्व की अत्यंत प्राचीन भाषाओं में से एक है। हिन्दी एक वैज्ञानिक भाषा भी मानी जाती है। विश्व की अनेक भाषाओं के कई शब्द हिंदी से ही उत्पन्न हुए हैं। विश्व में हिंदी को ख्याति दिलाने वाले प्रथम अति उर्जावान व्यक्तित्व स्वामी विवेकानंद हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ले गये थे, तत्पश्चात लोगों में हिंदी के प्रति जाग्रति बढ़ी अथवा दुनिया ने एक उर्जा संचारक के रूप में भारत की ओर देखना प्रारंभ किया। आज के इस परिवर्तनशील परिदृश्य में हिंदी एक सबल और सक्षम भाषा के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है। हिंदी आज विश्व की तीन सर्वाधिक प्रयुक्त की जाने वाली भाषाओँ में से एक है। विश्व के अनेक देशों में हिंदी भाषियों ने अपनी प्रतिभा से हिंदी को वहां प्रचारित व प्रसारित करने का कार्य किया है। आज विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की राजभाषा हिंदी ने विश्व समुदाय को अपनी क्षमता से परिचित करा दिया है। आज हिंदी वर्तमान की भाषा के साथ ही आने वाली पीढ़ी की भाषा बन चुकी है। आज भारत का हिंदी भाषी मानव संसाधन विश्व पटल पर अपनी प्रतिभा के बल पर धाक जमा चुका है। आज भारत विश्व की एक आर्थिक महाशक्ति बनने की दिशा में बढ़ रहा है। इसकी राजभाषा हिंदी भी पूरी सक्षमता के साथ आज विश्व मंच को प्रभावित कर रही है। आगे आने वाले समय में हिंदी वैश्विक स्तर पर बड़ी भूमिकाओं का निर्वाहन करने में सक्षम होगी। जिस प्रकार हिंदी भाषियों की संख्या में इजाफा हो रहा है उसे देखते हुए लग रहा है कि आने वाले समय में हिंदी बोलने व समझने वालों की संख्या विश्व में सर्वाधिक हो जाएगी। संख्याबल की बात करें तो हिंदी आज भी विश्व भाषा है। विश्व भाषा की ऐसी कोई विशेषता नहीं है जो हिंदी में न हो। हिंदी एक समर्थ भाषा है और आने वाले समय में विश्व समुदाय अधिक प्रभावित करते हुए सम्पूर्ण विश्व को दिशा देने में सक्षम होगी।

हिन्दी के विकास में जितना योगदान उन लोगों का है जो हिन्दी को अपनी मातृभाषा मानते हैं उतना ही और कहीं–कहीं तो उससे भी ज्यादा, उन लोगों का है जो उन क्षेत्रों में थे जहाँ हिन्दी न तो बोली जाती थी और न ही जिनकी मातृभाषा हिन्दी थी। महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन ने ''स्वयंभू'' की रामायण को हिन्दी का प्रथम ग्रन्थ माना है। इस प्रकार यह देखा जा सकता है कि प्राचीन काल से ही हिन्दी केवल किसी एक क्षेत्र या धर्म की भाषा नहीं रही है अपितु सम्पूर्ण हिन्दुस्तान की भाषा रही है।

हिन्दी विश्वभाषा बनने की राह पर है। पिछली एक सदी में जन–जीवन से जुड़ी इस विशालमना और सहजग्राही भाषा ने अद्‌भुत रूप से अपना विकास किया है। दिग्गज बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने और सैकड़ों विदेशी विश्वविद्यालयों ने इसके महत्व को स्वीकार किया है। परन्तु अपने ही देश के लोगों ने अभी तक इस महान भाषा को वह स्वीकृति और प्रतिष्ठा नहीं दी जिसकी वह वस्तुतः हकदार है। हिन्दी की विकास–यात्रा का अनुशीलन करें तो पाते हैं कि फिल्मों ने हिन्दी को लोकप्रिय बनाने में जो ऐतिहासिक भूमिका अदा की है उसका व्यावसायिक दोहन आज का इलेक्ट्रानिक मीडिया और विज्ञापन तन्त्र कर रहा है। आज जिस तरह से जन–संचार माध्यमों पर हिन्दी का वर्चस्व है, उसको लेकर हिन्दी भाषी समाज में गौरवानुभूति होनी चाहिये। इतिहास में यह पहला अवसर है जब वैश्विक वातावरण या भूमण्डलीकरण हिन्दी को उसकी हीनता से मुक्त कर रहा है।

हिंदी के अंतरराष्ट्रीय स्थिति की बात की जाए तो" पिछले दिनों विश्व की एक स्तरीय और अंतरराष्ट्रीय संस्था ने हिंदी के अनेकों रचनाकारों की कालजई कृतियों का अनुवाद प्रकाशित करके अप्रत्यक्षतः हिंदी की अंतरराष्ट्रीयता को प्रमाणित किया है।" यदि इस बात पर ध्यान दें तो हम पाएंगे कि हिंदी मात्र एक राष्ट्रभाषा ही नहीं वरन

यह मनुष्यता की सर्वोच्च अनुगूंज की अभिव्यक्ति है,जो उसकी अति समृद्ध संस्कृति की धात्री है।"– विश्व क्षितिज पर हिंदी नामक लेख में डॉ0,जयंती नौटियाल ने कहा कि "हिंदी, विश्व के लगभग 73 देशों में स्थान बना चुकी है, भारत में प्रायः सभी विश्वविद्यालयों में तो हिंदी पढ़ाई ही जाती है। इसके अलावा विश्व के 110 विश्वविद्यालयों में तथा संस्थानों में हिंदी का अध्ययन– अध्यापन होता है। विश्व में जहाँ भी भारतीय मूल के निवासी हैं। वहाँ किसी न किसी रूप में अर्थात राजभाषा,सहभाषा, संस्कार की भाषा अथवा शास्त्रीय (प्राचीन) भाषा की हैसियत से विद्यमान है।"

विश्व भाषा बनने के लिए प्रमुखतःतीन बातें आवश्यक होती हैं, एक तो बोलने–समझने वालों का विस्तृत भौगोलिक विवरण, दूसरा उस भाषा में लचीलापन और तीसरा उस भाषा में विश्वजन का भाव हो। हिन्दी में ये तीनों विशेषताएँ विद्यमान हैं। भौगोलिक दृष्टि से वह अपना स्थान विश्व में बना रही है, हिन्दी को बोलने समझने वाले प्रयोक्ता द्विभाषी या त्रिभाषी होते हुए भी हिंदी में अपनी पहचान बना पाते हैं।– दूसरी विशेषता लचीला होना है। हिन्दी जिसमें अन्य भारतीय भाषा–भाषियों के बीच संपर्क की भाषा है वहीं उसने फारसी, अरबी,अंग्रेजी आदि भाषाओं के शब्द भी अपनाए और अपनी स्थिति को भी अक्षुण्ण रखा। दूसरे शब्दों में हिंदी की अस्मिता दीवारों में भी प्रखर रही है। तीसरी विशेषता– हम हिंदी की विश्व जन की भाव से समझते हैं अर्थात हिंदी भाषी अपने देश में अनेक राज्यों में निवास करने के कारण प्रांतीयता से ऊपर उठे हुए हैं। ऐसे में साहित्य की विशाल परंपरा है जो विश्वमन को संबोधित है। विश्व के सभी सामान्य जन को विशेष रूप से संबोधित है। हिंदी भाषा के माध्यम से फिजी, दक्षिण अफ्रीका और मारीशस देशों में स्वाधीनता की आवाज उठाई गई हिंदी में विश्व साहित्य के अनुवाद हुए और हिंदी का साहित्य विश्व में अनुदूत हुआ। हिंदी साहित्य की बनावट और बुनावट को देखें तो हिंदी साहित्य में परंपरा के निर्वाह के साथ परिवर्तन की निरंतर आकांक्षा रही है। हिंदी साहित्य सामान्य से सामान्य जन को संबोधित है । सिद्धों के दोहों से लेकर भक्ति और रीतिकाल में भी समता का साम्राज्य रहा है। आधुनिक काल में हिंदी स्वाधीनता आंदोलन की वाहिका बनी, अनेक वैश्विक मतवादों का ग्रहण और मंथन हिंदी साहित्य में हुआ।आधुनिक हिंदी कविता की ताजगी और विश्व नागरिक वृति के बारे में प्रोफेसर जोसेफ्री मारल्स ने लिखा है कि–" ऐसी विश्व नागरिकता से हम अमेरिकी कवियों को रश्क होता है। हिंदी की आधुनिकता आयातित आधुनिकता नहीं है, उसका केंद्रीय स्वर सार्वभौम है, वह मनुष्य सम्बोध्य है, विशिष्ट मनुष्य नहीं।"

वैश्विक परिदृश्य पर यदि दृष्टिपात की जाए तो स्पष्ट होता है कि हिंदी की स्थिति भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों में न केवल महत्वपूर्ण रही है बल्कि इन विद्वानों के द्वारा किए गए शोधपरक, साहित्यिक, शिक्षणपरक, प्रौद्योगिकी, आधारित विविध हिंदी सामग्री का निर्माण मील के पत्थर साबित हुए हैं। चाहे वह गार्सा द तासी हों,जॉर्ज ग्रियर्सन हों, मारियो ला अफरीदी, क्यूया दोई,वारन्निकोव या तोमियो मिजोकामी, आदि हों। इनके ऐतिहासिक भाषा सर्वेक्षण,द्विभाषी कोश, अमूल्य हिंदी साहित्यिक कृतियों के सटीक अनुवाद आदि ने हिंदी भाषा और साहित्य को और समृद्ध बनाया।"

विश्व के पांचों महाद्वीपों के अनेक देशों के शीर्षस्थ एकाधिक विश्वविद्यालयों,शिक्षण संस्थाओं में हिंदी शिक्षण की निरंतर व्यवस्थाएँ सुचारू रूप से चल रही हैं। यहाँ हिंदी भाषा और साहित्य का शिक्षण प्रारंभिक स्तर से लेकर उच्च शोधपरक तुलनात्मक, व्यतिरेकी,व्याकरणिक आदि बिंदुओं से संबंधित हैं और गंभीर, व्यवस्थित रूप से किए जा रहे हैं।

चाहे काम की जरूरत हो, या समाज की, विदेशों में हिन्दी को सीखने–सीखाने का चलन बढ़ रहा है। विदेशों में बढ़ती भारतीय युवाओं की संख्या एक ओर विदेशी भाषा सीख रही है तो दूसरी ओर हिन्दी सिखा रही है। दुनिया के अनेक देशों में हिन्दी लर्निंग सेन्टर खुल चुके हैं और खुल रहे हैं। कई विश्वविद्यालयों में हिन्दी में अध्ययन–अध्यापन किया जाता है और वहाँ भारतीय ही नहीं विदेशी भी अध्ययनरत एवं शोधरत हैं। वर्तमान में ही नहीं अतीत में भी हिन्दी में उल्लेखनीय काम करने वाले अनेक विदेशी विद्वानों ने एक अलग इतिहास बनाया है। फादर कामिल बुल्के का नाम किसने नहीं सुना होगा। भारतीय अध्यात्म और दर्शन की गहरी चिन्तानशील दृष्टि बिरलों में ही प्राप्य है। बुल्के बेल्जियम से थे। जार्जअब्राहम ग्रियर्सन आयरलैंड से थे जिन्होंने हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखा। रोनाल्ड स्टुअर्ट मेक्ग्रेगॉर न्यूजीलैंड से थे जो कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में हिन्दी का अध्यापन करते थे, इन्होंने हिन्दी व्याकरण पर गहन कार्य किया। रूस से पीटर वरान्निकोव ने तो 'मानस' का रूसी में अनुवाद किया। वे हिन्दी के लेखकों से गहराई से जुड़े थे। दिल्ली के कनॉट प्लेस स्थित कॉफी हाउस में लेखको से संवाद करते और श्री विष्णु प्रभाकर जी से तो पत्रों के माध्यम से भी हिन्दी व्याकरण आदि पर सलाह–मश्विरा भी करते। चीन में प्रोफेसर च्योग चिंगख्वेइ ने अपना जीवन हिन्दी के प्रचार–प्रसार में लगा दिया । वे पेइचिंग विश्वविद्यालय से जुड़े हैं। जापान में अकियो हागा हिन्दी के विद्वान हैं उन्होंने जापानी साहित्य का अनुवाद हिन्दी में किया। हंगरी से इमरै बंधा ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्रोफेसर हैं और 'आनंदघन' पर इनका शोधपरक कार्य उल्लेखनीय है।

अकादमिक रूप से हिन्दी लम्बे समय से विश्वभर में फैली हुई है लेकिन पिछले दो दशकों में अकादमी से अलग व्यवहार और व्यापार में इसका प्रयोग बढ़ रहा है। अब ऐसा नहीं है कि लोग भारतीय धर्म, दर्शन, संस्कृति, साहित्य या कलाओं से प्रभावित होकर हिन्दी की तरफ आ रहे हैं बल्कि रोजगार, नौकरी और व्यवसाय ऐसे कारण हैं कि विदेशी हिन्दी में रूचि ले रहे हैं। जो कम्पनियाँ भारत में निवेश करना चाहती हैं, जिनके लिए भारत एक बड़ा बाजार है इसलिए उनके कर्मचारियों को हिन्दी का ज्ञान होना एक आवश्यकता है।

वर्तमान में वैश्विक परिदृश्य इस प्रकार का बन गया है कि हिन्दी लोगों की जरूरत बनती जा रही है और हिन्दी के प्रति उस देश के नेतृत्व ने भी ध्यान आकृष्ट किया है। जब विश्व योग दिवस मनाता है। तब समस्त विश्व योग के माध्यम से हिन्दी के अनेक शब्दों को एक साथ उच्चरित करता है, समझता है तथा धारण करता है। हो सकता है कि धारा प्रवाह हिन्दी भाषी विदेशों में न मिलें लेकिन यह भी कम नहीं कि हिन्दी से अनजान भी कम हैं। हमें यह भ्रम दिमाग से निकाल देना चाहिए कि अंग्रेजी अन्तरराष्ट्रीय भाषा है और समस्त विश्व में उसके जानकार मौजूद हैं। स्वयं यूरोप में अंग्रेजी का व्यवहार सर्वत्र नहीं होता। अंगेजी वहीं ज्यादा है जहाँ उसके उपनिवेश थे। चीन ने तो पिछले दो दशकों से अंग्रेजी को महत्व देना आरंभ किया है जब रोजगार और व्यवसाय की जरूरत बनी है। देखा जाए जो हिन्दी की सर्व स्वीकारोक्ति का जो वातावरण निर्मित हो चला है उससे स्पष्ट होता है कि आने वाले समय में भारतीयों का परचम किसी विदेशी भाषा में नहीं हिन्दी में ही लहराएगा।

आज परिस्थितियाँ तेजी से बदली हैं। पिछले एक दशक से पूँजी के असीम विस्तार और संचार साधनों के अभूतपूर्व विकास ने विश्व–बाजार, आर्थिक भूमण्डलीकरण की जो भूमिका रची हैं, उसमें मुनाफा आधारित उत्पादन प्रणाली को दुनिया के नये बाजारों की जरूरत है। बन्द दरवाजे खुल रहे हैं। खिड़कियाँ उन्मुक्त

हैं। बाहर की खुली हवा में सांस लेती जिन्दगी अब क्रमशः एक–दूसरे के निकटतर हो रही हैं सीमायें टूट रही है, दूरियाँ सिमट रही हैं। परिवहन–व्यवस्था तथा संचार–उपकरण में आयी क्रान्ति ने देशों के बीच की भौगोलिक दूरियाँ और राष्ट्रीय सीमाओं को करीब–करीब अप्रासंगिक बना दिया है। नयी बाजार–संस्कृति इस आर्थिक भूमण्डलीकरण का एक अनिवार्य हिस्सा है जो समग्र विश्व में एक समान व्यावसायिक जीवन–शैली, रहन–सहन, खान–पान, सौन्दर्य–चेतना और मूल्यबोध की एकरूपता पैदा कर रहा है। मुनाफा कमाने की इस रणनीति में सांस्कृतिक रूपों की एक नयी गतिशीलता तैयार हो रही है। मानों व्यवसाय और संस्कृति एक ही सिक्के के दो पहलू बन गये हैं। जाहिर है कि बाजार–विस्तार की इस प्रक्रिया में स्थानिक सांस्कृतिक तत्व एवं स्थानीय भाषायें विश्वबाजार के लिये महत्वपूर्ण साधन बन गयी है। ये भाषायें भूमण्डलीय उपभोक्ता–संस्कृति को स्थानीय परिवेश में आरोपित करने की भूमिका निभाती है। इस प्रकार जहाँ एक ओर स्थानीय संस्कृति भूमण्डलीय संस्कृति के रूपाकारों को अपना रही है, वहीं भूमण्डलीय संस्कृति भी अलग–अलग भौगोलिक परिवेश में वहाँ के तत्वों के मिश्रण से अपना परिधान बदल रही है। इस आदान–प्रदान की प्रक्रिया से भाषायें समुन्नता होती है, विकसित होती है।

वस्तुतः भूमण्डलीकरण के इस दौर से गुजरते हुये पिछले एक दशक से हिन्दी में कतिपय सकारात्मक प्रवृत्तियाँ दृष्टिगत होती हैं, जो उसके अस्तित्व को कायम रखने में अनुकूल सिद्ध होंगी। एक तो इधर हिन्दी में साहित्येत्तर लेखन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। दूसरे, परिणाम और गुणवत्ता दोनों दृष्टियों से हिन्दी अनुवाद का क्षेत्र प्रशस्त हुआ है। तीसरे, हिन्दी में अल्प विकसित समीक्षा की विधा पर इधर अधिक ध्यान केन्द्रित हुआ है, जो साहित्य के प्रसार में एक सकारात्मक पटाक्षेप ही माना जायेगा। चौथे, सूचना–क्रान्ति और संचार के माध्यम में हिन्दी को महत्वपूर्ण स्थान मिला है। चलचित्र एवं दूरदर्शन ने तो हिन्दी के जरिये गाँव–गाँव में विश्व के दर्शन करा दिये हैं। पत्रकारिता के क्षेत्र में ही नहीं, इण्टरनेट पर हिन्दी अब अधिक लोकप्रिय होती जा रही है।

वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी पत्रकारिता की यदि बात की जाए तो विदेशों में भी हिन्दी की कई पत्र पत्रिका प्रकाशित हो रही हैं। फिजी टाइम्स द्वारा प्रकाशित हिन्दी शांतिदूत, साप्ताहिक पत्रिका विदेशी पत्रकारिता में मील का पत्थर बन गयी है। मॉरिशस से प्रकाशित बसंत, इंग्लैण्ड से प्रकाशित पुरवाई, अमेरिका से प्रकाशित सौरभ, और विश्व विवेक इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। आज व्यापक स्तर पर अनुवाद कार्य हो रहा है। प्रेमचंद का गोदान तो विश्व की प्रायः सारी भाषाओं में अनुवादित हो चुका है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हिन्दी साहित्य का अनुवाद मूल हिन्दी भाषा में विदेशियों के द्वारा किया जा रहा है। विश्व मंच पर हिन्दी साहित्य,फिल्में और संगीत की भूमिका विदेशों में भारतीय संस्कृति एवं जनमानस के प्रति श्रद्धा के कारण भारतीयों को गहराई से समझने की इच्छा ने विदेशियों को साहित्य के प्रति ललक पैदा की है। तुलसीदास, सूरदास, कबीर, बिहारी जैसे कवियों की कविताएँ एवं रचनाएँ भारत देश की संस्कृति को दुनिया के कोने कोने तक पहुँचाने में हिन्दी की फिल्में, गाने टी.वी. कार्यक्रमों ने विश्व में हिन्दी को इतना लोकप्रिय बनाया है कि केन्द्रीय हिन्दी संस्थान में हिन्दी पढ़ने वाले 67 देशों के विदेशी छात्रों ने इसकी पुष्टि की, कि हिन्दी फिल्मी गानों को सुनकर उन्हें हिन्दी सीखने में मदद मिलेगी। सन् 1955 ई0 के बाद हिन्दी फिल्मों तथा टी.वी. कार्यक्रमों ने विश्वव्यापी लोकप्रियता प्राप्त की है। ''हम आपके हैं कौन, ताल, लगान, कभी खुशी कभी गम, परदेश, देवदास, थ्री इडियट'' आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय फिल्में हैं। भारत के

कलाकारों द्वारा भी हिन्दी गीत एवं गजलों के मंच पर हिन्दी का प्रचार प्रसार हो रहा हैं।

वैश्वीकरण और आर्थिक उदारीकरण में हिन्दी ने महती भूमिका अदा की है। विश्व में भारत की अपनी पहचान तो है ही, हिन्दी संपर्क भाषा की भूमिका निभा रही हैं। आज अनेक विदेशी तथा बहुराष्ट्रीय कंपनिया हिन्दी या अन्य भारतीय भाषाओं को जानने वाले अधिकारियों को नियुक्त करने में विशेष रूचि दिखा रहे हैं । उन्हें यह मालूम है कि यदि भारत के अथाह संभावनाओं वाले बाजार को हस्तगत करना है तो हिन्दी ही उसके लिए सबसे सशक्त माध्यम है।

हिन्दी भाषा के विकास में हिन्दी संस्था और संस्थान की भूमिका अविस्मरणीय है। प्राचीन काल से आज तक हिन्दी भाषा केवल एक ही प्रांत तक सीमित न रहकर भारत की भाषा बन गई है। और आज विश्व की भाषा बन गई है। देश की विभिन्न संस्थाएँ जैसे उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान,राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा ,चैन्नै, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान ,आगरा आदि संस्थाएँ हिन्दी भाषा के विकास एवं प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

विश्व परिदृश्य में हिन्दी का बढ़ता दायरा वर्तमान में बहुत तेजी से बढ़ा है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हिन्दी 170 देशों में किसी न किसी रूप में पढ़ाई और बोली जाती है। देश के बाहर 600 से ज्यादा हिन्दी विश्व विद्यालय और शोध संस्थान कार्य कर रहे हैं। मंदारिन और अंग्रेजी के बाद दुनिया की तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा हिन्दी है। नासा के भाषा विभाग प्रमुख डॉ. ब्रिक्स के मुताबिक हिन्दी दुनिया की एकमात्र ध्वन्यात्मक (फोनेटिक) भाषा है। भविष्य में यह कम्प्यूटर की भाषा होगी। इसी साल संयुक्त राष्ट्र (यूएन) ने हिन्दी में समाचार सेवा भी शुरू की है। ये सम्मान पाने वाली हिन्दी पहली गैर यूएन एशियाई भाषा बन गई है।

इतिहास की सबसे प्रभावशाली भाषाओं में हिन्दी वर्चस्व बढ़ता जा रहा है – जिस देश का प्रभुत्व दुनिया में ज्यादा होता है। उसी देश का प्रभुत्व भाषा के स्तर पर दुनिया सीखेगी। इतिहास और वर्तमान इस बात के साक्षी हैं कि शक्तिशाली लोगों की मातृभाषा विश्व स्तर पर सीखी, बोली और लिखी जायेगी। और लिंग्बा फ्रांका बनेगी। लिंग्बा फ्रांका का अर्थ है। – इस्तेमाल में ली जाने वाली वो सबसे प्रभावशाली भाषा। इस पैमाने पर देखें तो बीते तीन हजार साल में ग्रीक, लैटिन, पॉर्च्यगीज, स्पैनिश, फ्रेंच और अंग्रेजी अलग–अलग दौर में प्रभावशाली रही है। आज जो हिन्दी का प्रभुत्व बढ़ रहा है वो इसलिये है क्योंकि भारत का प्रभाव भी दुनिया में बढ़ रहा है। जैस–जैसे यह बढेगा, हिन्दी भी बढ़ेगी। हिन्दी लिंग्बा फ्रांका के तौर पर दुनिया में विस्तार पाए इसके लिए जरूरी है कि भारत को अपनी वित्तीय, सैन्य और तकनीकी ताकत को बढ़ाना होगा। अंर्तराष्ट्रीय संबंध शिक्षा संस्थान ने अंतरराष्ट्रीय मामलों की पढ़ाई करने वाले छात्रों को पढ़ने के लिए पाँच भाषाएँ सुझाई है। इनमें से हिन्दी भी एक है। संस्था का कहना है कि आबादी के लिहाज से भारत दुनिका का सबसे बड़ा देश है। यहाँ 24 आधिकारिक भाषाएँ हैं। परंतु हिन्दी लगभग सब जगह बोली जाती है और यह सबसे अधिक तेजी से बढ़ रही है।

इंटरनेट पर हिन्दी का विस्तार–हिन्दी और विस्तृत हो रही है। इंटरनेट पर भी हिन्दी का विस्तार हो रहा है। इंटरनेट में हिन्दी का उपयोग सबसे तेज 94 प्रतिशत की दर से बढ़ रहा है। अंग्रेजी की रफ्तार 19 प्रतिशत है। हर पाँच में से एक व्यक्ति हिन्दी में सामग्री ढूँढ रहा हैं। सन् 2021 तक इंटरनेट पर करीब 35 करोड़ लोग हिन्दी के होंगें। स्मार्टफोन और कम्प्यूटर पर हिन्दी में सामग्री ढूँढने वाले लोगों की संख्या 2 गुना तेजी से बढ़ रही है।

हिन्दी वैश्विक फलक पर अपना स्थान अवश्य बना पाएगी। हमारी राजभाषा हिन्दी जिस तरह आपसी संवाद के माध्यम के रूप में संपर्क भाषा है, वैसी है भूमण्डलीकरण के दौर में फिल्में बाजारों में व्यवहार में लाई जा रही हैं। विश्व के हिन्दी समुदाय को एक सूत्र में बाँधने के लिए हिन्दी आज युगीन परिस्थतियों के अनुरूप लक्ष्य निर्धारित कर भविष्य की संभावनाओं और चुनौतियों को सहज सरल बनाने के लिए प्रयासरत है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. एन. वेंकटेश्वर, संपादक, दक्षिण में हिन्दी प्रचार आन्दोलन का इतिहास, ऑफसेट डिविजन, 1994
2. शर्मा रामविलास– भाषा और समाज– राजकमल प्रकाशन, प्रा.लि. 1 बी नेता जी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–110002, तीसरा संस्करण–1989
3. शर्मा रामविलास–ऐतिहासिक भाषा विज्ञान और हिन्दी भाषा–राजकमल प्रा.लि. 1 बी नेता जी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–110002, प्र. सं.–2001
4. सांकृत्यायन राहुल–राष्ट्रभाषा हिन्दी–राधाकृष्ण प्रकाशन, जी–17, जगतपुरी दिल्ली–110051, प्र. संस्करण–2002, आवृत्ति–2004
5. द्विवेदी महावीर प्रसाद–हिन्दी भाषा –वाणी प्रकाशन–21 ए दरियागंज, नई दिल्ली 110002, संस्करण–1995
6. गोपी कृष्ण राठी, मधुकर, गोवर्धन शर्मा–राष्ट्रभाषा हिन्दी–रूपा बुक्स प्रा.लि. एस–12 शापिंक काम्पलेक्स तिलक नगर जयपुर–302004, प्र.सं.–1995
7. मृगेश मणिक, राजभाषा की प्रवृतियाँ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006
8. मुले, गुणाकर शर्मा, सुभाष, मिश्र, देवेन्द्र (सं.), हिन्दी भाषाः विविध आयाम, साहित्य संसद, नई दिल्ली, 2006
9. Mangalam Kumar, S. Mohan, India's Languages Crisis An introductory study. New Century, Book House, Madras, 1965
10. दुबे मालती– वैश्विक परिपेक्ष्य में हिन्दी, पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद,प्राक्कथन, 1992,1999
11. मलिक मोहम्मद, राष्ट्रभाषा विकास के विविध आयाम, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002
12. भट्ट मोहनलाल, (प्रकाशक), रजत जयंती ग्रंथ, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा, 1962
13. द्विवेदी महावीर प्रसाद, हिन्दी भाषा, वाणी प्राकशन, नई दिल्ली, 2003
14. पी.आर. निवास शास्त्री, कर्नाटक में हिन्दी प्रचार की गतिविधियाँ, कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, बैंगलोर, 1998
15. शुक्ल आचार्य रामचन्द्र : हिन्दी साहित्य का इतिहास प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली–110002, सं0 2015 ई0।
16. मोहम्मद डॉ0 मलिक : राजभाषा हिन्दी,प्रवीण प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली– 1100030, सं0 1993 ई0।
17. रचना (पत्रिका) मई जून 2018 हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,भोपाल (म.प्र.)
18. दैनिक भास्कर (समाचार पत्र दिनांक 14 सितम्बर 2019) जबलपुर संस्करण

19. बाहरी डॉ0 हरदेव : हिन्दी भाषा,संस्करण 1994ई0, अभिव्यक्ति प्रकाशन, 847, विश्वविद्यालय मार्ग, इलाहाबाद
20. बाहरी डॉ0 हरदेव : शिक्षार्थी हिन्दी शब्दकोश, परिशिष्ट 1, राजपाल ऐण्ड सन्स, कश्मीरी गेट दिल्ली, सं0 1994ई0
21. आफताब आलम : द सण्डे इण्डिया, 30 मई 2010ई0
22. विनीत कुमार : नया ज्ञानोदय, मई 2010
23. प्रभाकर श्रोत्रिय : 'अन्यथा' जुलाई 2006
24. वागर्थ, दिसम्बर 2009
25. अक्षरा (पत्रिका) सितम्बर अक्टूबर 2015 म.प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपाल
26. रचना (पत्रिका) 15 जुलाई 2015, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,भोपाल (म.प्र.)